बी. एड. प्रथम वर्ष
सत्र - 2019 -2020 /2021
विषय - समकालीन भारत एवं शिक्षा
यूनिट - 4 (a)
प्रकरण - गुणवत्तपूर्ण शिक्षा
व्याख्यान सं. - 06

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

Continued from the previous class

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के आयाम

1. **शिक्षक पर ध्यान (Attention to teachers) -** एक अच्छा शिक्षक अधिगम प्रक्रिया में मूल्यों को शामिल कर अधिगम परिणामों को प्रभावी बना देता है। छात्रों का अच्छे निष्पादन परिणाम दिखने वाले विद्यालय शिक्षक का चुनाव कई स्तरों पर करते हैं। वे शिक्षकों किस शिक्षण प्रभाविता को बढ़ाने हेतु सभी उपायों पर ध्यान देते हैं।

2. **पूर्व बाल्यकाल विकास पर ध्यान (Attention to early childhood development) -** पूर्व बाल्यकाल विकास सम्भतः सबसे प्रभावी निवेश है। जमैका में किये गए अध्ययन के अनुरसार प्रयोगात्मक समूह में रखे गए बच्चे, जिनकी माताओं को बाल्यकाल के प्रारंभिक वर्षों में शिशु के संज्ञानात्मक, भौतिक, व संवेगात्मक विकास हेतु ज्ञान दिया गया था, की शैक्षिक उपलब्धि में 42% की अधिकता उन बच्चों की तुलना में देखि गयी जिनकी माताओं को इस प्रकार की शिक्षा नहीं दी गई थी।

3. **संस्कृति पर ध्यान (Attention to Culture) -** संस्कृति शिक्षा का एक अहम् हिस्सा है किन्तु विभिन्न कारणों से इस नज़रअंदाज किया जाता है। पाठ्यक्रम की भाषा के रूप में मातृभाषा का प्रयोग कई देशों में विवाद का विषय रहा है। शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में पाया है कि वे विद्यालय जो छात्रों के अधिगम हेतु मातृभाषा का प्रयोग करते हैं वहाँ छात्रों की उपस्थिति प्रतिशत व विकास दर अधिक होती है और अपव्यव व अवरोधन में कमी आती है। छात्र अपनी मातृभाषा में ही बेहतर सीख सकते हैं अतः पहले उन्हें उनकी मातृभाषा में शिक्षा देनी चाहिए तत्पश्चात राष्ट्रीय भाषा का ज्ञान कराया जाना चाहिये।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सूचक

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की रुपरेखा निम्नांकित क्षेत्रों में विभजित की जा सकती है। इन्हे गुणवत्ता के सूचक भी कहा जाता है:-

1. **भौतिक संसाधन -** शिक्षा की गुणवत्ता हेतु विद्यालय अनुदान का उपयोग विद्यालय को स्वच्छ हरा-भरा एवं आकर्षक बनाने में किया जाये ताकि बच्चे सहज एवं तनाव मुक्त महसूस कर सकें। विद्यालय गतविधियों को प्रभावी बनाने हेतु कंप्यूटर शिक्षण को सार्थक करने के उद्देश्य से सभी विद्यालयों का विद्युतीकरण किये जाने की आवश्यकता है।

2. **प्रकिया -** प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन हेतु यूनिट टेस्ट की योजना का क्रियान्वयन गुणवत्ता सुधर की दिशा में अच्छा कदम है। प्राथमिक स्तर पर पूर्व कक्षा में रोके जाने की व्यस्था समाप्त की गयी है। उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित कॉर्नर की स्थापना, विज्ञानं प्रशिक्षण हेतु अभयास एवं प्रयोग सम्बन्धी अवधारणाओं पर ज़ोर देने का प्रयास लगातार करने की जरुरत है।

3. **मानव संसाधन -** शिक्षकों की क्षमता निर्माण हेतु जनपद व ब्लॉक स्तर पर कार्यक्रम, कार्यशाला एवं परिचर्चाएं लगातार की ज़रूरर है। इस ज्ञान का उपयोग शिक्षक विद्यार्थियों को कक्षा के अंदर व बाहर की गतिविधियों एवं जीवन के अनुभवों के आधार नए ज्ञान का सृजन करने योग्य बना सकते हैं।

4. **विषयवस्तु -** NCF- 2005 में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को संशोधित कर यांत्रिक रटंत अधिगम के स्थान पर विद्यार्थी केन्द्रित अधिगम को महत्व दिया गया है।

5. **तकनिकी -** तकनिकी का प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को लचीला बाल-केंद्रित बनता है। कंप्यूटर अधिगम प्राप्ति का का जांचा-परखा माध्यम यही जो स्वयं केंद्रित अधिगम हेतु